अन्दर ज्ञान, योग और धारणा की ताकत है तो सेवा में कुछ भी खर्च नहीं होता

दादी जानकी

बाबा हमको हर बात में धीरज सिखाते हैं, जिससे हमारी यह आदत बन जाये क्योंकि हमको धीरज देवी बनना है। शान्ति और प्रेम धीरज से मिलता है, नहीं तो प्रेम, शान्ति के बिगर रूखा है फिर खुशी के बिगर प्रेम नहीं होगा। बाबा ने कहा है कि आँखें हमको धोखा देती हैं इसलिए अपनी दृष्टि को दिव्य बनाओ। जिनकी बुद्धि दिव्य है उनकी दृष्टि सदा दिव्य होगी। अगर बुद्धि, कर्मेन्द्रियों के वश है तो योग नहीं लग सकता। हमारे दिल से 'बाबा शुक्रिया' शब्द निकलता है क्योंकि बाबा ने हमको सहजयोगी बनाया है। सबकुछ करो परन्तु नष्टोमोहा, अनासक्त वृत्ति हो। वृत्ति को देखो कि कहाँ आसक्ति तो नहीं है? क्योंकि कामी, क्रोधी, अहंकारी, लोभी, मोही की आँखों से पता चलता है। आँखें ही पाँच विकार दिखाती हैं कि इसमें कौन-सा विकार है लेकिन हमको समझ है कि एक विकार है तो पाँचों ही हैं क्योंकि वह एक दो के बिगर चल नही सकते। इसलिए पाँच विकारों को जीतो। जो बहुतकाल से युद्ध करते हैं उनको अपने में डाउट रहता है कि हमारी हार न हो जाए। जो बाबा के बच्चे बाबा पर बलिहार जाते, जो ईश्वर के बच्चे हैं वह कभी हार नहीं खाते हैं। हम गले का हार बनने के लिए बलि चढ़ते हैं, वह दृष्टि में बाबा को रखते हैं और बाबा से सुनने के लिए उनके कान खुले हैं ताकि वह कर्मातीत बनें। जैसे कल किसी ने पूछा कि अन्त में एन्जिल बनने वाली आत्माओं को कौन-सी स्मृति रहेगी, जिससे वह एन्जिल बनें? उन्हों को और कोई ख्याल नहीं है लेकिन स्मृति में रहता कि हम कल्प पहले बने थे और किसी को देखने की फुर्सत नहीं है। वह सदा अपनी मस्ती में मस्त रहते जिससे मौलाई मस्ती चढ़ती है। भगवानुवाच है कि हम कल्प पहले बने थे, अभी हमको बनना है और फिर से बनेंगे। साकार में जब कोई नये-नये बाबा के पास आते थे तो बाबा प्यार से कहेंगे 'आओ मेरे बच्चे' तुम ही कल्प पहले वाले हो। बच्चे फूल बन जायें, बाबा हमारे से यह चाहते हैं इसलिए न किसी को कांटा लगाना है, न हमको कांटा लगे। सदा गुलाब खिला हुआ हो, कभी मुरझाये नहीं। कोई भी हालत में तूफान लगे, कुछ भी हो जाये मुझे खुश रहना है। यह अटेन्शन एन्जिल बनने वाली आत्मायें अपने ऊपर रखेंगी। आवाज़ से परे जाने वाली आत्माओं को मेहनत नहीं लगती है क्योंकि आवाज़ से परे जाने की आदत है। आत्मा और परमात्मा को देखा नहीं जाता लेकिन पहचाना जाता है, जितना एक दो की पहचान है उतना रिसपेक्ट है, अगर पहचान कम है तो रिसपेक्ट कम है इसलिए सदा स्वमान की सीट पर रहने से औरों को पहचानना आसान होगा। दूसरी बात कि जब तक सभी आत्मायें नीचे आयेंगी तब तक हमको पार्ट बजाना है फिर हम बाबा के साथ हैं इसलिए थकना नहीं है। थकावट उनको होती है जिनको बाबा से सकाश और ब्लैसिंग नहीं मिलती। हम दुआयें मांगते नहीं हैं लेकिन औरों से मिलती हैं और अभी बाबा ने हमारी थकान दूर कर दी है। दिल में बडी ताकत है जब हम सच्ची दिल से बाप से कुछ भी छिपाते नहीं हैं। योग से ताकत और खुशी मिलती है क्योंकि जितना हम सतोप्रधान बनते है उतना हमारे में ताकत आती है। वैसे तो सेवा से बहुत खुशी मिलती है परन्तु कहते हैं हम थक गयी तो कुछ जमा नहीं होगा। वैसे हमारे ज्ञान, योग और धारणा में इतनी ताकत है जो सेवा में कुछ खर्च नहीं होता है। ज्ञान से ताकत बनती रहती है इसलिए व्यर्थ से फ्री हैं। बाबा से सर्व सम्बन्ध होने से वह शक्ति हमारे में आ गयी है क्योंकि आत्मा और परमात्मा का सत का संग है। उसके मिलन की शक्ति हमको खींच रही है। फिर धारण करने से और चलन से वैल्यू का पता चलता है इसलिए अपनी धारणा को इतना श्रेष्ठ और सतोगुणी बनाते जायें। पुरुषार्थ के लिए हमारा एक मिनट भी निष्फल न जाये, यह तब कर सकेंगे जब हम बाबा का कहना माने। पुरुषार्थ माना आत्मा बाप से मिलन मना रही है। यहाँ की प्रालब्ध है कि हम न्यारे और प्यारे रहें, पूरे ट्रस्टी, विदेही, त्यागी और तपस्वी मूर्त बनें। सदा स्मृति रहे कि हम भगवान के बच्चे हैं - यह हमारे बोल, चाल और चलन से दिखाई दे। भगवान ने स्मृति दी है कि तुम मेरे कल्प पहले वाले बच्चे हो। अगर हम पुरुषार्थ में अलबेले बन जायें तो हम माला में पीछे आयेंगे और बुद्धि बाहर जायेगी। भगवान ने यज्ञ रचा है ताकि हम सभी इकट्ठे रहे क्योंकि ईश्वर के स्नेह बिना और कोई मजा नहीं है। व्यर्थ बातों से दिमाग खाली होगा तो बाबा की बातें अन्दर जायेगी। अगर दिमाग गरम है तो अन्दर कुछ भी जाता नहीं है फिर दिल में खुशी नहीं होगी। इसलिए दिल को सदा सच्चा और साफ रख करके, बडी दिल और रहमदिल वाले बनो। जो रहम दिल है उनको अन्दर से है कि जो हमको बाबा से मिला है वह सबको मिले। कोई भी खाली हाथ न जाये।